Patory Samastipur

Topic – CHANGES IN THE FIELD OF EDUCATION

(शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन)

Sol– पाश्चात्य संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में देखने को मिलता है। इतने बड़े देश के शासन-प्रबंध का काम चलाने के लिए अनेक व्यक्तियों की आवश्यकता थी जोकि नौकरशाही शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत दफ्तर आदि में काम कर सके। इतनी अधिक लोगों को न तो अंग्रेज अपने देश से ला सकते थे और न ही लाना संभव था। इसलिए यहीं के कुछ लोगों को शिक्षित करना आवश्यक था। इस शिक्षा-प्रसार का उद्देश्य अपने स्वार्थों की पूर्ति थी, न कि भारतीयों के कल्याण इसलिए यह शिक्षा किताबी शिक्षा मात्र थी जिसका कोई सम्बंध तकनीकी शिक्षा से न था। फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। जैसाकि डा० यादव ने लिखा है – ईसाई धर्म प्रवर्तकों ने इस देश में अंग्रेजी शिक्षा का प्रारंभ किया। सन् 1835 में लार्ड बेण्टिक के शासनकाल में लार्ड मैकाले ने स्कूलों में अंग्रेजी के माध्यम द्वारा शिक्षा देने का विधान किया। इससे शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। अंग्रेजी स्कूलों की संख्या भी बढ़ने लगी सन् 1844 में लार्ड हार्डिंग ने सरकारी अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षित व्यक्तियों को राजकीय नौकरी में प्राथमिकता देने की नीति/नीति की घोषणा की। इससे अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार बढ़ने लगा। इसके पश्चात वर्ष के बाद कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सरकार ने स्त्री-शिक्षा की भी प्रचुर प्रोत्साहन दिया।

दिया। साथ ही, यह भी मानना पड़ेगा कि अंग्रेजी शिक्षा प्रगतिशील शिक्षा थी, क्योंकि प्रथमतः यह धर्मनिरपेक्ष और उदार थी तथा सब जातियों व धर्मों के व्यक्तियों के लिए समान थी, और द्वितीयक यह शिक्षा तार्किक, वैज्ञानिक और प्रजातन्त्रवादी विचारधाराओं से ओत-प्रोत थी। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतवासियों के विचारों, दृष्टिकोणों तथा रहन-सहन में अनेक परिवर्तन होने लगे, क्योंकि अंग्रेजी भाषा के माध्यम द्वारा भारतवासियों के विचारों, दृष्टिकोणों तथा रहन-सहन में अनेक परिवर्तन होने लगे। क्योंकि अंग्रेजी भाषा के माध्यम द्वारा भारतीयों का सम्बंध विश्व से स्थापित हो गया। अंग्रेजी शिक्षा के कारण ही जाति-पाँति का भेदभाव, अस्पृश्यता की भावना, धार्मिक कट्टरपन व अंध-विश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ आदि कम होने लगी। "कुछ लोगों ने पाश्चात्य विचारों तथा परम्पराओं का अन्धानुकरण करना आरंभ किया, कुछ ने पाश्चात्य एवं भारतीय आदर्शों के समन्वय का प्रयत्न किया तथा कुछ के हृदय में पाश्चात्य प्रभावों के कारण तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण के आधार पर भारत के प्राचीन श्रेष्ठ आदर्शों के पुनरुत्थान की भावना जाग्रत हुई। इस प्रकार 19वीं शताब्दी की बौद्धिक क्रांति के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय पुनर्जागरण का युग का सूत्रपात हुआ और भारत का आधुनिकीकरण होने लगा।" दूसरी ओर पाश्चात्य शिक्षा का एक बहुत बड़ा और बुरा प्रभाव यह हुआ कि भारतीय जनता में एक 'बाबू वर्ग' या क्लर्क वर्ग का सृजन हुआ और तब भी सन 1931 तक केवल 8 प्रतिशत भारतवासी ही साक्षर हो सके। परन्तु इसी शिक्षा के कारण राष्ट्रीयता की भावना और स्वतंत्रता की इच्छा दिन-प्रतिदिन प्रबल होती गई। जहाँ अंग्रेजी स्कूल-कॉलेज की 'फैक्ट्रियाँ' से लाखों की संख्या में 'बाबू' निकलते रहे वहीं उन कॉलेजों में कुछ अमूल्य रत्नों का भी जन्म हुआ। अंग्रेजी की शिक्षा-फैक्ट्रियों में उत्पन्न ये अमूल्य रत्न हैं - महात्मा गाँधी, तिलक, लाला-लाजपत राय, गोखले, वी. सुभाष और जवाहर लाल नेहरू जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा या पाश्चात्य बौद्धिक-शक्ति से अपने को शक्तिवान् बनाकर अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध आन्दोलन किया, भारत को स्वतंत्र बनाया, स्वयं अमर बन गए और मातृभूमि को भी अमर बना गए।

समाप्त